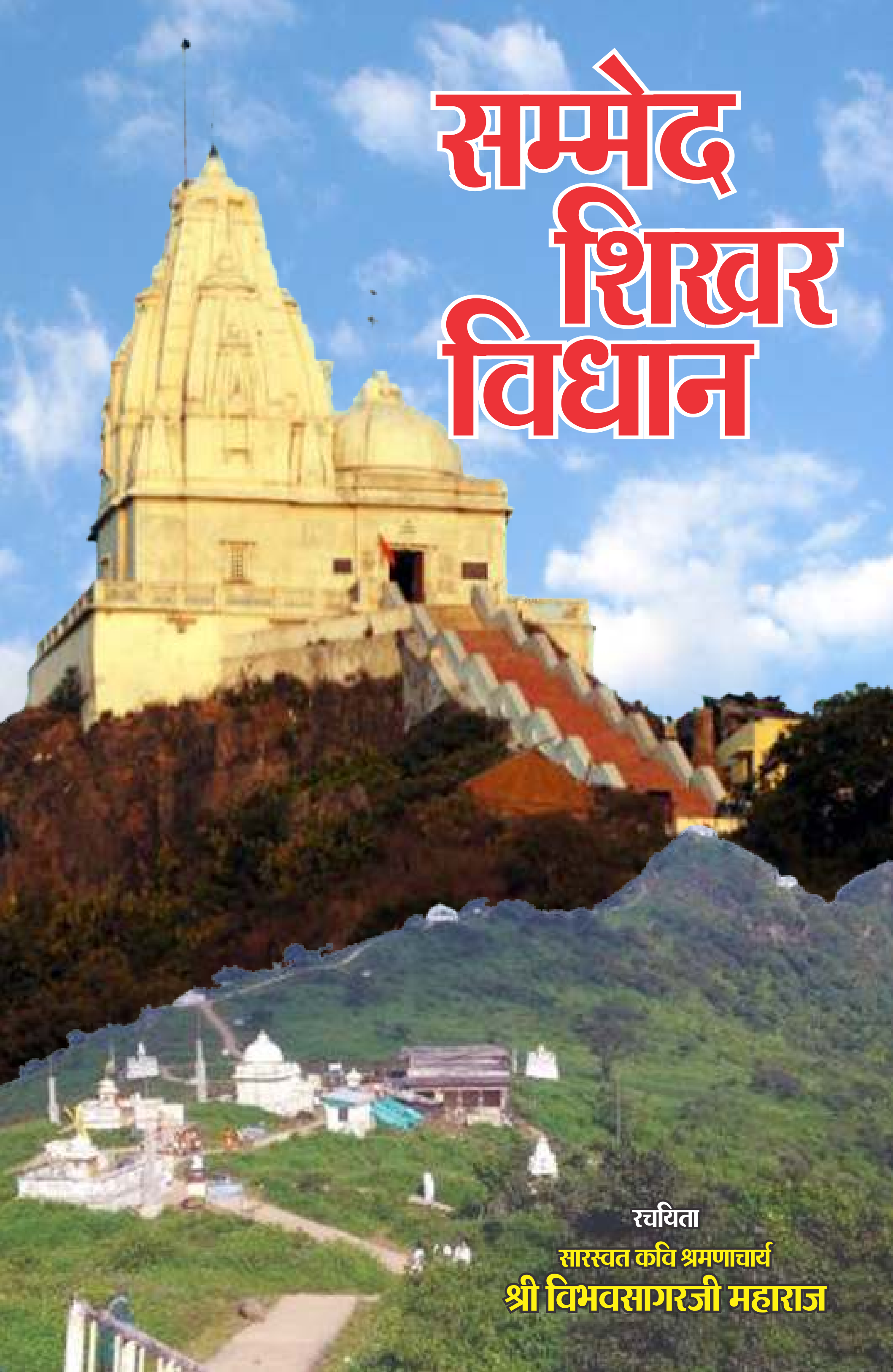

सम्मेद शिखर विधान

रचयिता
सारस्वत कवि श्रमणाचार्य
श्री विभवसागरजी महाराज

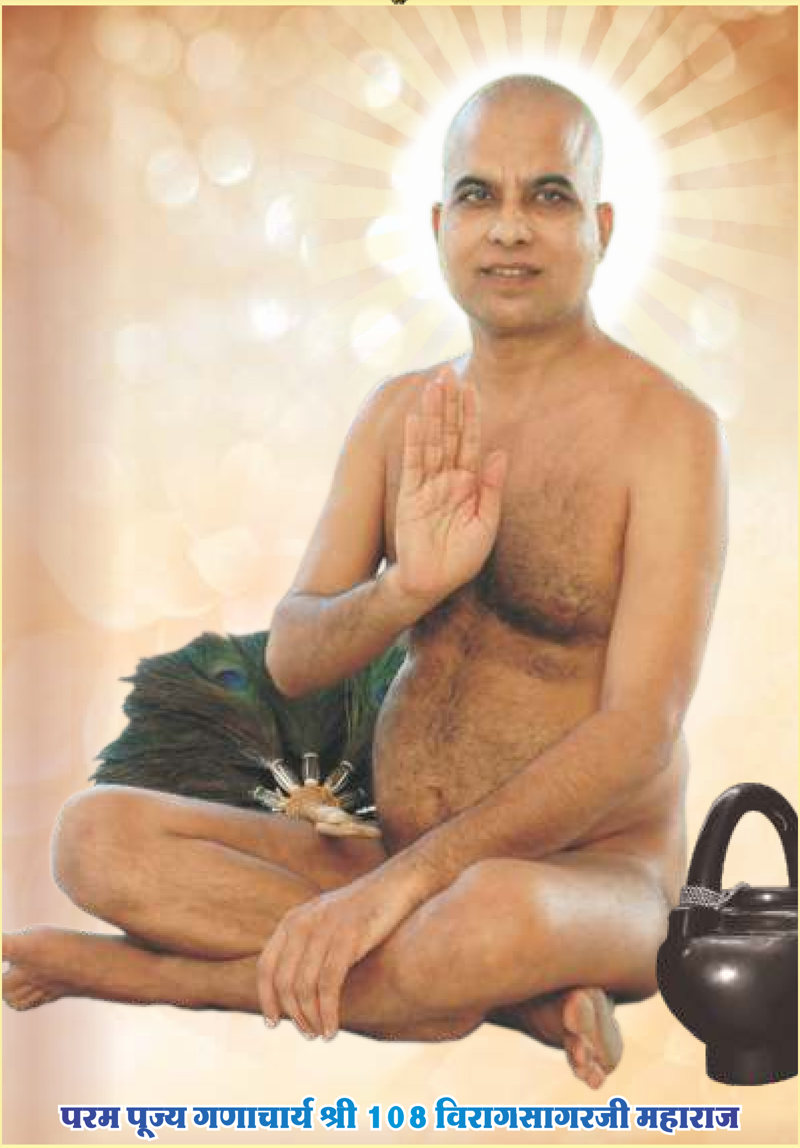

परम पूज्य गणाचार्य श्री 108 विरागसागरजी महाराज

सम्मेद शिखर विधान

रचयिता
सारस्वत कवि श्रमणाचार्य
श्री विभव सागरजी मुनिराज

मंगल स्मरण

वीसं तु जिण वरिंदा,
अमरासुर वंदिदा धुद कलेसा।
सम्मेदे गिरि सिहरे,
णिव्वाण गया णमो तेसिं ॥

(सुरगण वंदनीय कर्मकलंक को धोने वाले बीस तीर्थंकर सम्मेदगिरि शिखर पर से णिर्वाण पधारे, उनको नमस्कार हो।)

कृति – सम्मेद शिखर विधान
रचयिता – सारस्वत कवि श्रमणाचार्य विभवसागर मुनिराज
संकलन – ब्र. प्रिया दीदी
प्रकाशन – वर्षायोग कोतमा 2016
प्रसंग – संघ सहित सम्मेद शिखर जी वंदना के उपलक्ष्य में ।
पुण्यार्जक – सन्मति –मीना जैन
एवं जैन चश्मा घर, परकोटा, वनवे रोड
प्राप्ति स्थल सागर (म.प्र.) 9425462997
श्रीमति मीना जैन (प्रान्तीय कोर्डीनेटर अखिल भारतीय महिला परिषद सागर
मो. 7746021008
प्रतिष्ठान – जैन चश्मा घर, सागर
वीर प्रिन्टिग प्रेस, अशोक नगर
मुद्रक – वीर प्रिंटिंग प्रेस
सुभाषगंज, अशोकनगर (म.प्र.)
8989456097

विधान : प्रस्तावना

श्री सम्मेद शिखर तीर्थ वंदना का दुर्लभतम शुभ संयोग बना 24 फरवरी से 31 मई तक शिखर जी में प्रवास रहा। पर्वतराज की 21 वंदना निजी हुई।

संघस्थ साधुगण एवं माताजी तथा त्यागी वृन्द ने अधिक वंदनायें भी की। 16 पिच्छिधारी एवं 4 त्यागीव्रती 20 साधकों का एक समूह पर्वतराज की वंदना पर रहा।

विधान क्या है ?

अनुभूतियों का अमर कोषालय है। पर्वतराज की वंदना करते समय जो पवित्र ऊर्जावान परिणाम हुए उन पवित्र परिणामों के रस रसायनों ने भक्ति काव्य का रूप ले लिया। वे भक्ति काव्य एक दो नहीं शताधिक होते गये। फलस्वरूप सिर्फ संरक्षण होता रहा। कोतमा वर्षा योग में पवित्र ऊर्जावान काव्य कोषालय ने कलम का सहारा लिया। गुरूपूर्णिमा से रक्षाबंधन तक एक माह में सम्पूर्ण लेखन कार्य हुआ।

इसमें सम्मेद शिखर पूजा है तदनंतर सम्मेद शिखर विधान। आचार्य विमल सागर पूजा, सम्मेद शिखर स्तुति तथा समाधि भक्ति आदि रचनाऐं स्वरचित हैं।

इस संकलन को संघस्थ प्रिया दीदी ने रिकार्डिंग कर स्वयं लेखन कर मुझे सौंपा। फलस्वरूप मैंने अपनी परिणाम ऊर्जा से संस्कारित कर विधिवत लेखन एवं सम्पादन कर कृति रूप तैयार किया। सन्मति जैन चश्मा घर ने सत्प्रयास कर अग्रिम कार्य किया।

पाठकगण ! प्रस्तुत रचना भण्डार से ऊर्जावान किसी भी काव्य का आश्रय लेकर और आराधना करते हुए अपने जीवन को तीर्थमय बनायें ।
तीर्थकृति में प.पू.आ. श्री विराग सागर जी का आशीर्वाद रहा।

शुभ भावना.

श्री सम्मेद शिखर जी तीर्थयात्रा
एक दृष्टि में .....

प्रस्थान –

परमपूज्य श्री दीक्षाचार्य श्री 108 विरागसागर जी महाराज के मंगल आशीष तले तथा गुरु भक्ति पारायण सकल दि. जैन समाज राजिम के प्रार्थनामयी निवेदन पर उनकी ही व्यवस्था में व्यवस्थित सद्भाव के साथ 19 जनवरी 2016 को दोपहर में संघ का विहार छत्तीसगढ़ के प्रयाग तीर्थ राजिम से शाश्वत सिद्ध भूमि सम्मेद शिखर जी के लिये हुआ।

संघस्थ साधुगण – 1 आचार्य + 6 मुनि + 1 ऐलक +
3 क्षुल्लक + 2 माताजी = 13
मुनि आचरण सागर जी, मुनि अध्ययन सागर जी,
मुनि आवश्यक सागर जी, मुनि अध्यापन सागर जी,
मुनि अर्हन्त सागर जी, मुनि आचार सागर जी,
ऐलक अनेकान्त सागर जी, क्षु. अनशन सागर जी,
क्षु. आगम सागर जी, क्षु. अनुशासन सागर जी,
क्षु. माताजी अर्हम् श्री, क्षु. माताजी ह्रीम् श्री।
कुल = 13 पिच्छिधारी + संघस्थ दीदी।

प्रवेश 24 फरवरी 2016 प्रातः 7.30 बजे।

प्रवास – शाश्वत विहार (वात्सल्य भवन) मधुवन

शिलान्यास – 24 फरवरी 2016 को बुन्देलखण्ड भवन एवं जिनालय का शिलान्यास।

आगमन – 26 फरवरी 2016 को क्षु. ओम् श्री माताजी, क्षु. अहिंसा श्री माताजी, क्षु. आराधना श्री माताजी तथा संघस्थ दीदीगण का आगमन।

प्रथम वंदना – 1 मार्च को पर्वतराज आरोहण
2 मार्च से 8 मार्च तक सात वन्दनायें।
चौपड़ा कुण्ड पर विश्राम।

निर्वाणोत्सव – चन्द्रप्रभु की टोंक पर चन्द्रप्रभु का निर्वाणलाडू महोत्सव 15 मार्च 2016 को मनाया।

आचार्य दिवस – 31 मार्च को आचार्य पदारोहण दिवस मनाया।

महावीर जयंती – 19 अप्रैल को भ. महावीर जयंती कार्यक्रम मधुवन दि. जैन समाज की उपस्थिति में मनाया गया।

दीक्षा समारोह – 14 अप्रैल सन् 2016 को मध्यलोक शोध संस्थान, मधुवन में लगभग 60 पिच्छिधारी साधुगण की उपस्थिति में अर्हंश्री माताजी, ओम् श्री माताजी, ऐलक आगम सागर जी तीन दीक्षाऐं सम्पन्न हुईं।

विराग जयंती – 2 मई 2016 को श्री विमल समाधि मंदिर में विराग जयंती महोत्सव मनाया।

पर्वत वंदना – 12 मई को ससंघ पर्वतराज की वंदनार्थ चला।
13 मई से 27 मई तक 13 वंदनाएँ पूर्ण हुईं तथा शांति विधान किया।

सिद्धचक्र विधान – पार्श्वनाथ टोंक स्वर्णभद्र कूट पर सिद्धचक्र विधान 27 मई को किया।

मंगल विहार – बीसपंथी कोठी मधुवन से सर्व संघ के मध्य स्वाध्याय पूर्वक मंगल विहार हुआ। विहार व्यवस्था रांची समाज ने संभाली।

संत मिलन – अकलतरा में मुनि विद्यासागर संघ से मिलन। मधुवन में स्थविराचार्य श्री संभव सागर के अनेक बार दर्शन एवं चर्चा लाभ। आ. निरंजन सागर आ. शीतल सागर ऐलाचार्य विशुद्ध सागर जी से मिलन।

ऐतिहासिक क्षण – 14 अप्रैल को दीक्षा समारोह में 60 पिच्छिधारी साधुओं का दीक्षा मंच पर एक साथ विराजमान कर सान्निध्य लाभ में निज करकमलों दीक्षा दान।
14 अप्रैल 2016 दीक्षा महोत्सव में आगन्तुक साधुगण लगभग 60 (पिच्छिधारी)

आशीर्वाद – गणाचार्य श्री विराग सागर जी महाराज

शुभकामना – स्थविराचार्य संभव सागर जी महाराज।

सान्निध्य – विभव सागर ससंघ (16 पिच्छिधारी)
आचार्य निरंजन सागर मुनि
आचार्य शीतल सागर मुनि ससंघ 2 पिच्छि,
एलाचार्य विशुद्ध सागर जी
मुनि विद्यासागर जी (5 पिच्छि) ससंघ
मुनि मोक्ष सागर सम्यक् सागर (2 पिच्छि)

आर्यिका संघ – सुरत्न मति आर्यिका जी संघ (आ. अभिनंदन सागर गुरु)
सुमंगल श्री आर्यिका जी संघ
(आचार्य देवनन्दि जी महाराज)
गुरूनंदनी आर्यिका जी संघ
सक्षममति आर्यिका जी संघ
(सुबल सागर जी संघ)

स्वाध्याय – आत्मानुशासन, पंचास्तिकाय, पद्मनंदि पंचविंशतिका, द्रव्य संग्रह, आलाप पद्धति, परीक्षा मुख, जैनेन्द्र सिद्धांत प्रवेशिका, करलक्खण आदि।

यात्रा में सहयोगी –

सेवाभावी गुरु भक्त परायण श्रावक सुधी,
श्रावक धर्मोपासक –

1 श्री मनोज जैन बाकलीवाल दुर्ग
2 श्री पंकज जैन दुर्ग
3 श्री विमलचंद जैन राजिम
4 श्री रूपचंद जैन राजिम, ब्र. श्री मोती भैया मधुवन
5 श्री जयकुमार जैन-श्रीमती ज्योति जैन, राजिम
6 श्री महेन्द्र (चंदू) जैन-श्रीमती अरुणा जैन, राजिम
7 श्री अनिल चौधरी-श्रीमती सुनीता चौधरी, राजिम
8 श्री सन्मति जैन सागर
9 श्री मणिलाल जी जैन नागपुर,
10 श्री मनोज जैन अध्यक्ष , राजिम
11 श्री ज्ञानचंद जैन श्रीमति रजनी दुर्ग
12 श्री पप्पू भैया, जैन टेण्ट हाऊस भिलाई
13 श्री देवेन्द्र जैन वैशाली नगर भिलाई
14 श्री नेमीचन्द्र जैन स्टेशन मंदिर दुर्ग
15 श्री कजोडमल लुहाडिया, दुर्ग
16 श्री चिंतामणि बज, जयपुर

श्री शिखर जी प्रवास एवं विहार व्यवस्था –

1 श्री विमल चन्द्र जैन रांची एवं रांची समाज।
2 श्री सुधीर जैन अणिन्दा, मधुवन
3 श्री संतोष कुमार बैटरी वाले, सागर
4 श्री गजेन्द्र मुक्कीरवार शिरड शहापुर
5 श्री पवन झांझरी एवं जैन समाज परभणी
6 श्री अशोक सिरस परिवार निवाई
7 श्री राजेश आकुल जबलपुर
8 श्री दिलीप शांतिलाल जी नागपुर
9 श्री आशीष अशोककुमार जी, नागपुर रेडीमेड स्टोर्स

श्री सम्मेद शिखर जी पूजा

॥ दोहा ॥

सिद्ध क्षेत्र सम्मेद को, नमन अनंतों बार ।
सर्व सिद्ध पूजा रचूँ, सिद्ध भक्ति उरधार ॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।
(पुष्पांजलिं क्षिपामि)

सम्मेदाचल तीर्थ यह, सिद्धपुरी का द्वार ।
प्रासुक जल पूजा रचूँ, सम्मेदाचल सार ॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं....।

परम पूज्य शुभ तीर्थ यह, अति पावन आधार ।
चंदन से पूजा रचूँ, सम्मेदाचल सार ॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारताप विनाशनाय चन्दनम्....।

सिद्ध अनंतों हो गये, होगें सिद्ध अपार ।
अक्षत से पूजा रचूँ, सम्मेदाचल सार ॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान्......।

पुष्पों की वर्षा करें, सुरगण अपरम्पार ।
पुष्पों से पूजा करूँ, सम्मेदाचल सार ॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं.....।

आप शिखर जी से गये, लोक शिखर अविकार ।
नैविद से पूजा रचूँ, सम्मेदाचल सार ॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं......।

ज्ञान दीप जलता रहे, होवे शुद्ध विचार ।
दीपक से पूजा करूँ, सम्मेदाचल सार ॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं......।

संयम से सुरभित रहूँ, जैनागम अनुसार ।
धूप खेय पूजा रचूँ, सम्मेदाचल सार ॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं......।

महा मोक्षफल चाहता, रत्नत्रय को धार ।
श्रीफल से पूजा रचूँ, सम्मेदाचल सार ॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्ष फल प्राप्तये फलम्......।

आठों द्रव्य सजाय कर, आठों गुण चित् धार ।
अर्घ समर्पण मैं करूँ, सम्मेदाचल सार ॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं......।

जयमाला

त्रोटक छंद

जय पारस पारस गूँज रहीं, हर टोंक यहाँ पर पूज्य रहीं ।
नरनाथ जजें, सुरनाथ जजें, मुनिनाथ भजें, ऋषिनाथ भजें ॥

हर टोंक कहे हर कूट कहे, अघ छूट रहे, अघ छूट रहे ।
कब से कितने मुनि मोक्ष गये, सब सिद्ध शिला पर जाय बसे ॥

उनके तप के परमाणु यहाँ, व्रत के जप के परमाणु यहाँ ।
निखरे बिखरे कण में कण में, अतएव यहाँ क्षण में क्षण में ॥

उनकी महिमा, उनकी गरिमा, हम पूज रहे, उनकी प्रतिमा ।
जिनने– जिनने निज ध्यान किया, जिनने– जिनने शिवधाम लिया ।।

बहुभक्ति बढ़ा हम पूजत हैं, जिनभक्ति रचा हम नाचत हैं ।
जय सिद्ध धरा, अति शुद्ध धरा, इसमें परिणाम विशुद्ध भरा ।।

तप से नय से कुछ सिद्ध हुए, कुछ संयम जप से सिद्ध हुए ।
व्रत चारित से कुछ सिद्ध हुए, श्रुत से धृति से कुछ सिद्ध हुए ।।

कुछ ध्यान कला से सिद्ध हुए, कुछ ज्ञान कला से सिद्ध हुए ।
जय हो जय हो जय हो जय हो, सब सिद्धन की जय हो जय हो ।।

यह पर्वत पावन– पावन है, बरसा जिन आगम सावन है ।
बरसाय रहा, हरषाय रहा, अपनी महिमा दरशाय रहा ।।

कब से इसकी महिमा कितनी, जिनदेव बता सकते जितनी ।
हम तो केवल नत मस्तक हैं, पद वंदत हैं, शुभ चिंतक हैं ।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं......।

विधान प्रारंभ

24 तीर्थंकरों के गणधरों की कूट

गौतम स्वामी टोंक

सिद्ध भूमि पर सिद्ध भक्ति से, सिद्धों के गुण गाता हूँ ।
श्री सम्मेद शिखर तीरथ की, पूजा आज रचाता हूँ ।।

सर्वप्रथम गुरुपद वन्दन,
गणधर पद में नमन – नमन ।
गणधर गुरु के चरण यहाँ,
तीर्थ वंदना शुरू यहाँ ।।

जितने भी तीर्थंकर हैं,
होते सबके गणधर हैं ।
उनके पावन चरण यहाँ,
छुओ– छुओ आचरण यहाँ ।।

गणधर गण के धारी हैं,
श्रमण संघ अधिकारी हैं ।
हे गुरुवर ! शासनकर्त्ता,
दिव्य ध्वनि प्राशन कर्त्ता ।।

ऋद्धिवंत त्रेषठ प्यारे,
गणनायक सब गुण धारे ।
जगतीतल के हे भगवन्,
भक्तित्रय से नमन –नमन ।।

तीर्थवंदना करके अपना, जीवन सफल बनाता हूँ ।
टोंक टोंक पर कूट – कूट पर, पावन अर्घ चढ़ाता हूँ ।।

अर्घ :– ॐ ह्रीं श्री गौतम स्वामी आदि गणधर देवादि ग्राम के उद्यान आदि भिन्न–भिन्न स्थानों से निर्वाण पधारे हैं, तिनके चरणारविन्द को मेरा मन वचन काय से बारम्बार नमस्कार हो जलादि अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

ज्ञानधर कूट (कुन्थुनाथ भगवान)

सिद्ध भूमि पर सिद्ध भक्ति से, सिद्धों के गुण गाता हूँ ।
श्री सम्मेद शिखर तीरथ की, पूजा आज रचाता हूँ ।।

आ गय आ गय आ गय रे,
पर्वत ऊपर आ गय रे ।
तीर्थ शिखर जी आ गय रे,
प्रथम वंदना पा गय रे ।।

जितनी दृढ़तम इच्छा हुई,
उतनी कठिन परीक्षा हुई ।
अरे परीक्षाफल आया,
सफल हुआ दर्शन पाया ।।

जय–जय कुन्थु जिनेश्वर जी,
ऋद्धीश्वर – सिद्धीश्वर जी ।
कूट ज्ञानधर पावन तम,
पावन कर देता तन –मन ।।

ज्ञानी ! ज्ञान कला देता,
राग द्वेष भुला देता ।
कूट ज्ञानधर कहे इधर,
बनो ज्ञानधर तप व्रतधर ।।

तीर्थवंदना करके अपना, जीवन सफल बनाता हूँ ।
टोंक टोंक पर कूट – कूट पर, पावन अर्घ चढ़ाता हूँ ।।

अर्घ :– ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्रादि मुनि 96 कोड़ा कोड़ी 96 करोड़ 32 लाख 96 हजार 742 मुनि इस कूट से सिद्ध भए तिनके चरणारविन्द को मेरा मन वचन काय से बारम्बार नमस्कार हो जलादि अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

फल :– इस टोंक की भावना सहित वंदना करने से एक करोड़ उपवास का फल होता है।

जाप मंत्र – ॐ ह्रीं अर्ह श्री कुन्थुनाथाय नमः ....।

श्री नमिनाथ स्वामी की टोंक (मित्रधर कूट)

सिद्ध भूमि पर सिद्ध भक्ति से, सिद्धों के गुण गाता हूँ ।
श्री सम्मेद शिखर तीरथ की, पूजा आज रचाता हूँ ।।

नमिनाथ की टोंक भली,
दर्शन पाओ खिले कली ।
कूट मित्रधर कहलाता,
करो मित्रता सिखलाता ।।

मिलो स्वयं के मित्र बनो,
अन्तर्बाह्य पवित्र बनो ।
संयम और चरित्र बनो,
यत्र – तत्र – सर्वत्र बनो ।।

केवल ज्ञान कला पाओ,
फिर ज्ञानामृत बरसाओ ।
त्रिभुवन के मन हरषाओ,
मोक्ष मार्ग भी दरशाओ ।।

गुण मैत्री सब से रखना,
गुणी बनो गुणमय दिखना ।
सदाचरण से गुणी बनूँ,
तीर्थंकर का ऋणी बनूँ ।।

तीर्थवंदना करके अपना, जीवन सफल बनाता हूँ ।
टोंक टोंक पर कूट – कूट पर, पावन अर्घ चढ़ाता हूँ ।।

अर्घ :– ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्रादि मुनि 9 कोड़ा कोड़ी 1 अरब 45 लाख 7 हजार 942 मुनि इस कूट से सिद्ध भए तिनके चरणारविन्द को मेरा मन वचन काय से बारम्बार नमस्कार हो जलादि अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

फल :– इस टोंक की भाव सहित वंदना करने से एक करोड़ उपवास का फल होता है।

जाप मंत्र – ॐ ह्रीं अर्ह श्री नमिनाथाय नमः।

श्री अरनाथ स्वामी की टोंक
(नाटक कूट)

सिद्ध भूमि पर सिद्ध भक्ति से, सिद्धों के गुण गाता हूँ ।
श्री सम्मेद शिखर तीरथ की, पूजा आज रचाता हूँ ।।

रागद्वेष में ना अटको,
चतुर्गति में ना भटको ।
जिसे देखता इकटक है,
वह जग क्या है नाटक है ।।

पर्यायों के स्वांग यहाँ,
रचते रहते जीव यहाँ ।
ऐसा नाट्य दिखाते हैं,
अज्ञ समझ न पाते हैं ।।

भेद ज्ञान जिसने पाया,
नाटक वही समझ पाया ।
आदिनाथ सम हो नाटक,
खोलो मोक्ष महल फाटक ।।

द्रव्य दृष्टि को पहिचानो,
पर्यायों को पर मानो ।
मोह कर्म से जाओ छूट,
पूजों अरहनाथ का कूट ।।

तीर्थवंदना करके अपना, जीवन सफल बनाता हूँ ।
टोंक टोंक पर कूट – कूट पर, पावन अर्घ चढ़ाता हूँ ।।

अर्घ :– ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्रादि मुनि 99 करोड़ 99 लाख 99 हजार 999 मुनि इस कूट से सिद्ध भए तिनके चरणारविन्द को मेरा मन वचन काय से बारम्बार नमस्कार हो जलादि अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

फल :– इस टोंक की भाव सहित वंदना करने से 96 करोड़ उपवास का फल होता है।
जाप मंत्र – ॐ ह्रीं अर्हं श्री अरहनाथाय नमः।

श्री मल्लिनाथ स्वामी की टोंक
(संबल कूट)

सिद्ध भक्ति से सिद्ध भूमि पर, सिद्धों के गुण गाता हूँ ।
श्री सम्मेद शिखर तीरथ की, पूजा आज रचाता हूँ ।।

मोह मल्ल का हनन किया,
इन्द्रिय दल का दमन किया ।
रागद्वेष का शमन किया,
मोक्षमार्ग में गमन किया ।।

भक्ति - भाव उर धरता हूँ,
मल्लिनाथ पद नमता हूँ ।
बड़े भाग्य दर्शन पाया,
सम्यक् संयम बल पाया ।।

संबल कूट निराला है,
संबल देने वाला है ।
संबल कूट चला आया,
शंकाओं का हल पाया ।।

देता सबको सम्यक् बल,
कूट कहाता यह संबल ।
श्री चरणों का पावन जल,
कहता है सिद्धालय चल ।।

तीर्थवंदना करके अपना, जीवन सफल बनाता हूँ ।
टोंक टोंक पर कूट – कूट पर, पावन अर्घ चढ़ाता हूँ ।।

अर्घ :– ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्रादि मुनि 96 करोड़ मुनि इस कूट से सिद्ध भए तिनके चरणारविन्द को मेरा मन वचन काय से बारम्बार नमस्कार हो जलादि अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

फल :– इस टोंक की भाव सहित वंदना करने से एक करोड़ प्रोषध उपवास का फल होता है।
जाप मंत्र – ॐ ह्रीं अर्हं श्री मल्लिनाथाय नमः।

श्री श्रेयांसनाथ स्वामी की टोंक
(संकुल कूट)

सिद्ध भूमि पर सिद्ध भक्ति से, सिद्धों के गुण गाता हूँ ।
श्री सम्मेद शिखर तीरथ की, पूजा आज रचाता हूँ ।।

चलो वन्दना करें सभी,
तीर्थ शिखर जी आज अभी ।
पाया है उत्तम कुल तो,
आज पूज लो संकुल को ।।

सिद्धों का कुल उत्तम कुल,
परम निराकुल शाश्वत कुल ।
कूट निराला यह संकुल,
भव समुद्र में दुर्लभ पुल ।।

पार उतरना आ जाओ,
जीवन तीर्थ बना जाओ ।
अद्भुत परिवर्तन लाओ,
व्रत संयम लेकर जाओ ।।

दोनों नय से कर निर्णय,
आत्म तत्त्व में हो जा लय ।
श्रेयमार्ग रुचता जाये,
समझो मोक्ष निकट आये ।।

तीर्थवंदना करके अपना, जीवन सफल बनाता हूँ ।
टोंक टोंक पर कूट – कूट पर, पावन अर्घ चढ़ाता हूँ ।।

अर्घ :– ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्रादि मुनि 96 कोड़ा कोड़ी 96 करोड़ 96 लाख 9 हजार 542 मुनि इस टोंक से सिद्ध भए तिनके चरणारविन्द को मेरा मन वचन काय से बारम्बार नमस्कार हो जलादि अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

फल :– इस टोंक की भाव सहित वंदना करने से एक करोड़ प्रोषध उपवास का फल

जाप मंत्र – ॐ ह्रीं अर्हं श्री श्रेयांसनाथाय नमः।

श्री सुविधिनाथ (पुष्पदंत) स्वामी की टोंक
(सुप्रभ कूट)

सिद्ध भूमि पर सिद्ध भक्ति से, सिद्धों के गुण गाता हूँ ।
श्री सम्मेद शिखर तीरथ की, पूजा आज रचाता हूँ ।।

कितनी पावन पुण्य धरा,
सिद्ध भूमि व्रत शुद्ध धरा ।
ऊँचा पर्वत हरा – भरा,
जल–थल–नभ में पुण्य भरा ।।

जिसको पाने मैं तरसा,
आज उसे पा मन हरषा ।
दिव्य ध्वनि अमृत वरषा,
मोक्ष मार्ग मुझको दरशा ।।

अनेकान्त का चिन्तन है,
स्याद्वाद का मन्थन है ।
मिथ्यामत का खण्डन है,
श्री जिनमत का मण्डन है ।।

पुष्पदन्त की वाणी में,
हितकारी जिनवाणी में ।
आज इसे मैं पूज रहा,
जैसा मुझको सूझ रहा ।।

तीर्थवंदना करके अपना, जीवन सफल बनाता हूँ ।
टोंक टोंक पर कूट – कूट पर, पावन अर्घ चढ़ाता हूँ ।।

अर्घ :– ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्रादि मुनि 1 कोड़ा कोड़ी 99 लाख 7 हजार 780 मुनि इस कूट से सिद्ध भए तिनके चरणारविन्द को मेरा मन वचन काय से बारम्बार नमस्कार हो जलादि अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

फल :– इस टोंक की भाव सहित वंदना करने से एक करोड़ उपवास का फल होता है।

जाप मंत्र – ॐ ह्रीं अर्हं श्री पुष्पदंत देवाय नमः....।

श्री पद्मप्रभु स्वामी टोंक
(मोहन कूट)

सिद्ध भूमि पर सिद्ध भक्ति से, सिद्धों के गुण गाता हूँ ।
श्री सम्मेद शिखर तीरथ की, पूजा आज रचाता हूँ ।।

मोहन कूट का कहना है,
मोह नहीं अब करना है ।
अरे मोह क्या महाबला,
रोक रहा जो मोक्षकला ।।

रागोदय कर सुख देता,
द्वेषोदय कर दुख देता ।
सुखाभास क्या साता है,
जिसके बाद असाता है ।।

मोहित इतना कर जाता,
सुखाभास में भरमाता ।
मोह विचाराघात करे,
सदाचार का घात करे ।।

सब कर्मों में महाबली,
मोहकर्म है कर्मबली ।
अतः मोह मोही त्यागो,
निज स्वरूप में जब जागो ।।

तीर्थवंदना करके अपना, जीवन सफल बनाता हूँ ।
टोंक टोंक पर कूट – कूट पर, पावन अर्घ चढ़ाता हूँ ।।

अर्घ :– ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्रादि मुनि 99 करोड़ 87 लाख 43 हजार 757 मुनि इस कूट से सिद्ध भए तिनके चरणारविन्द को मेरा मन वचन काय से बारम्बार नमस्कार हो जलादि अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ।। 8।।

फल :– इस टोंक की भाव सहित वंदना करने से एक करोड़ उपवास का फल होता है।

जाप मंत्र – ॐ ह्रीं अर्ह श्री पद्म प्रभ देवाय नमः।

प्रथम वलय पूर्णार्घ

सिद्ध भूमि पर सिद्ध भक्ति से, सिद्धों के गुण गाता हूँ ।
श्री सम्मेद शिखर तीरथ की, पूजा आज रचाता हूँ ।।

जो सम्मेद शिखर आते,
भाव सहित दर्शन पाते ।
वे फिर नरक नहीं जाते,
तीर्थ वंदना फल पाते ।।

पशु पर्याय ना पाते हैं,
कारण क्या बतलाते हैं ।
उनके भाव सुधर जाते,
अद्भुत परिवर्तन लाते ।।

दुर्गति के बन्धक कारण,
त्याग चुके आकर तत्क्षण ।
सम्यग्दर्शन प्रकटाकर,
व्रत संयम कुछ अपनाकर ।।

श्रद्धा श्रुत चर्या का फल,
कर देता नर जन्म सफल ।
अतः नरक ना जा सकते,
पशु पर्याय ना पा सकते ।।

तीर्थवंदना करके अपना, जीवन सफल बनाता हूँ ।
टोंक टोंक पर कूट – कूट पर, पावन अर्घ चढ़ाता हूँ ।।

प्रथम वलय पूर्णार्घ :– ॐ ह्रीं श्री अष्टदलकमलाधिपते श्री सम्मेदशिखर सिद्ध–भूमि पूर्णार्घ जलादि अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ।

श्री मुनि सुव्रत स्वामी की टोंक
(निर्जर कूट)

सिद्ध भूमि पर सिद्ध भक्ति से, सिद्धों के गुण गाता हूँ ।
श्री सम्मेद शिखर तीरथ की, पूजा आज रचाता हूँ ।।

मुनि सुव्रत का कूट यही,
भाव शुद्धता फूट रही ।
व्रतधारो भव सफल करो,
भव समुद्र से आप तरो ।।

व्रत ही स्वर्ग दिलाता है,
व्रत ही मोक्ष दिलाता है ।
नरभव सफल बनाता है,
भव–भव में सुख दाता है ।।

व्रती बनो या महाव्रती,
बालयति या वृद्धयती ।
दुर्लभ अवसर तेरा है,
जागो तभी सबेरा है ।।

निर्जर कूट पूज्य जय– जय,
श्री सम्मेद शिखर जय – जय ।
जरा सावधानी रखले,
कर्म निर्जरा तू करले ।।

तीर्थवंदना करके अपना, जीवन सफल बनाता हूँ ।
टोंक टोंक पर कूट – कूट पर, पावन अर्घ चढ़ाता हूँ ।।

अर्घ :– ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्रादि मुनि 99 कोड़ा कोड़ी 99 करोड़ 99 लाख 999 मुनि इस कूट से सिद्ध भए तिनके चरणारविन्द को मेरा मन वचन काय से बारम्बार नमस्कार हो जलादि अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

फल :– इस टोंक की भाव सहित वंदना करने से एक करोड़ प्रोषध उपवास का फल होता है।

जाप मंत्र – ॐ ह्रीं अर्हं श्री मुनि सुव्रत देवाय नमः।

श्री चन्द्रप्रभु स्वामी की टोंक
(ललित कूट)

सिद्ध भूमि पर सिद्ध भक्ति से, सिद्धों के गुण गाता हूँ ।
श्री सम्मेद शिखर तीरथ की, पूजा आज रचाता हूँ ।।

ललित कूट अति सुन्दर है,
चन्द्रप्रभु का मन्दिर है ।
टोंक निराली प्रभु तेरी,
हुई दिवाली प्रभु मेरी ।।

पर्वत ऊँचा यह तेरा ,
उच्च विचारों का डेरा ।
चन्दाप्रभु के चारु चरण,
सिखलाते हैं तपश्चरण ।।

जितनी कठिन चढ़ाई है,
उतनी महिमा गायी है ।
जितना ऊँचा जीना है,
उतना ऊँचा जीना है ।।

ललित कूट की यह सीढ़ी,
पावन कर देती पीढ़ी ।
धन्य हुए हम आकर के,
चन्दाप्रभु को ध्याकर के ।।

तीर्थवंदना करके अपना, जीवन सफल बनाता हूँ ।
टोंक टोंक पर कूट – कूट पर, पावन अर्घ चढ़ाता हूँ ।।

अर्घ :– ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्रादि मुनि 984 अरब 12 करोड़ 80 लाख 84 हजार 595 मुनि इस कूट से सिद्ध भए तिनके चरणारविन्द को मेरा मन वचन काय से बारम्बार नमस्कार हो जलादि अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ।

फल :– इस टोंक की भाव सहित वंदना करने से 96 लाख उपवास का फल होता है।

जाप मंत्र – ॐ ह्रीं अर्हं श्री चन्द्र प्रभ देवाय नमः।

श्री आदिनाथ भगवान की टोंक

सिद्ध भूमि पर सिद्ध भक्ति से, सिद्धों के गुण गाता हूँ ।
श्री सम्मेद शिखर तीरथ की, पूजा आज रचाता हूँ ।।

आदिनाथ भगवन् ! मेरे,
चिन्तन चेतन धन मेरे ।
हे दुखहर्त्ता नमन– नमन,
हे सुखकर्त्ता नमन– नमन ।।

मोक्षमार्ग नेता अर्हन् !
कर्मबंध भेत्ता भगवन् !
विश्व तत्त्व ज्ञाता गुणधन !
गुण पाने गुणधर वन्दन ।।

अवधपुरी के स्वामी हो,
अष्टापद शिवगामी हो ।
भविजन तेरा जाप करें,
पाप– ताप – संताप हरें ।।

श्री सम्मेद शिखर आया,
चरण कमल दर्शन पाया ।
बड़े – बड़े हैं चरण – यहाँ,
देते शुद्धाचरण यहाँ ।।

तीर्थवंदना करके अपना, जीवन सफल बनाता हूँ ।
टोंक टोंक पर कूट – कूट पर, पावन अर्घ चढ़ाता हूँ ।।

अर्घ :– ॐ ह्रीं श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्रादि मुनि 10 हजार मुनि कैलाश पर्वत से मोक्ष गए तिनके चरणारविन्द को मेरा मन वचन काय से बारम्बार नमस्कार हो जलादि अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

जाप मंत्र– ॐ ह्रीं अर्हं श्री आदिनाथाय नमः।

श्री शीतलनाथ स्वामी की टोंक
(विद्युतवर कूट)

सिद्ध भूमि पर सिद्ध भक्ति से, सिद्धों के गुण गाता हूँ ।
श्री सम्मेद शिखर तीरथ की, पूजा आज रचाता हूँ ।।

विद्युत वर यह कूट कहा,
कर्म यहाँ पर छूट रहा ।
यह अद्भुत आकर्षक है,
प्रतिपल भविजन हर्षक है ।

परम पुण्य सम्पादक है,
भाव शुद्धि संवर्द्धक है ।
जो इसका दर्शन करले,
शीतलता निज में भर ले ।।

शील खजाने शीतल जिन,
हे शीलेश्वर नमन – नमन ।
मेरा चित् उज्ज्वल कर दो,
स्याद्वाद अमृत भर दो ।।

न्यारे – न्यारे कूट अरे,
पुण्य खजाना लूट अरे ।
संत तपस्या के कारण,
विशुद्ध ऊर्जा भण्डारण ।।

तीर्थवंदना करके अपना, जीवन सफल बनाता हूँ ।
टोंक टोंक पर कूट – कूट पर, पावन अर्घ चढ़ाता हूँ ।।

अर्घ :– ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्रादि मुनि 18 कोड़ा कोड़ी 42 करोड़ 32 लाख 42 हजार 905 मुनि इस कूट से सिद्ध भए तिनके चरणारविन्द को मेरा मन वचन काय से बारम्बार नमस्कार हो जलादि अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

फल :–इस टोंक की भाव सहित वंदना करने से एक करोड़ उपवास का फल होता है।

जाप मंत्र– ॐ ह्रीं अर्हं श्री शीतलनाथाय नमः।

श्री अनंतनाथ स्वामी की टोंक
(स्वयंभूवर कूट)

सिद्ध भूमि पर सिद्ध भक्ति से, सिद्धों के गुण गाता हूँ ।
श्री सम्मेद शिखर तीरथ की, पूजा आज रचाता हूँ ।।

कूट स्वयंभूवर आया,
मुनियों ने शिवपद पाया ।
वही विशुद्धि यहाँ भरी,
आत्म साधना से निखरी ।।

कण–कण को छूकर देखो,
कर्म छूटते यह देखो ।
मिटे अनन्तानुबन्धी,
बनो सिद्ध के सम्बन्धी ।।

सिद्धों से सम्बन्ध रखो,
श्रद्धामय सम्बन्ध रखो ।
नहीं स्वार्थ संबंध रखो,
मात्र पुण्य अनुबंध रखो ।।

हे अनन्त भव अन्त मिले,
परम दिगम्बर सन्त मिले ।
जिनदर्शन में लगन लगी,
मुक्तिप्रिया से लगुन लिखी ।।

तीर्थवंदना करके अपना, जीवन सफल बनाता हूँ ।
टोंक टोंक पर कूट – कूट पर, पावन अर्घ चढ़ाता हूँ ।।

अर्घ :– ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्रादि मुनि 96 कोड़ा कोड़ी 70 करोड़ 70 लाख 70 हजार 700 मुनि इस कूट से सिद्ध भए तिनके चरणारविन्द को मेरा मन वचन काय से बारम्बार नमस्कार हो जलादि अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

फल :–इस टोंक की भाव सहित वंदना करने से एक करोड़ उपवास का फल होता है।

जाप मंत्र – ॐ ह्रीं अर्हं श्री अनन्तनाथाय नमः।

श्री संभव नाथ स्वामी की टोंक
(धवल कूट)

सिद्ध भूमि पर सिद्ध भक्ति से, सिद्धों के गुण गाता हूँ ।
श्री सम्मेद शिखर तीरथ की, पूजा आज रचाता हूँ ।।

धवलकूट की जय जय जय,
महाधवल की जय जय जय ।
श्री धवला की जय जय जय,
जय धवला की जय जय जय ।।

धवल कूट पर आये जो,
धवल भाव प्रकटाये जो ।
धवल भावना भायेगा,
धवल ज्ञान प्रकटायेगा ।।

धवल भावनाएँ जिसकी,
धवल साधनाएँ जिसकी ।
धवल ध्यान वह ध्यायेगा,
केवल बोध जगायेगा ।।

भव संभव हो जायेगा,
संभव पद जो आयेगा ।
भव– भव संयम भाव जगे,
मोक्षमार्ग में जीव लगे ।।

तीर्थवंदना करके अपना, जीवन सफल बनाता हूँ ।
टोंक टोंक पर कूट – कूट पर, पावन अर्घ चढ़ाता हूँ ।।

अर्घ :– ॐ ह्रीं श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्रादि मुनि 9 कोड़ा कोड़ी 12 लाख 42 हजार 500 मुनि इस कुट से मोक्ष गए तिनके चरणारविन्द को मेरा मन वचन काय से बारम्बार नमस्कार हो जलादि अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

फल :–इस टोंक की भाव सहित वंदना करने से 42 लाख उपवास का फल होता है।

जाप मंत्र – ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्भवनाथाय नमः।

वासुपूज्य भगवान की टोंक

सिद्ध भूमि पर सिद्ध भक्ति से, सिद्धों के गुण गाता हूँ ।
श्री सम्मेद शिखर तीरथ की, पूजा आज रचाता हूँ ॥

इस पर्वत पर आओ रे,
तीर्थ वंदना पाओ रे ।
संयम भाव सजाओ रे,
वासुपूज्य पद ध्याओ रे ॥

परम पूज्य श्री वासुपूज्य,
भगवन् ! मेरे वासुपूज्य ।
चम्पापुर कल्याण धरा,
धन्य – धन्य निर्वाण धरा ॥

देवोत्सव करने आये,
चम्पापुर उत्सव छाये ।
वाद्य यंत्र संगीत परम,
मंगल मंगल मंगलतम ॥

आकर मैं सम्मेद शिखर,
पूज रहा तुमको प्रभुवर ।
नाथ आपके युगल चरण,
पंचम युग में परम शरण ॥

तीर्थवंदना करके अपना, जीवन सफल बनाता हूँ ।
टोंक टोंक पर कूट – कूट पर, पावन अर्घ चढ़ाता हूँ ॥

अर्घ :– ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्रादि चम्पापुर मंदारगिरि से एक हजार मुनि सिद्ध भए तिनके चरणारविन्द को मेरा मन वचन काय से बारम्बार नमस्कार हो जलादि अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

फल :–इस टोंक की भाव सहित वंदना करने से एक करोड़ उपवास का फल होता है।

जाप मंत्र – ॐ ह्रीं अर्ह श्री वासुपूज्य देवाय नमः।

श्री अभिनंदन नाथ टोंक
(आनंद कूट)

सिद्ध भूमि पर सिद्ध भक्ति से, सिद्धों के गुण गाता हूँ ।
श्री सम्मेद शिखर तीरथ की, पूजा आज रचाता हूँ ॥

अभिनंदन पद अभिनंदन,
भक्ति - भाव सादर वंदन ।
कूट मिला मुझको आनंद,
फूट रहा मन में आनंद ॥

छूट रहा भव – भव का बंध,
मैं निर्द्वन्द रहूँ निर्बन्ध ।
वंदन हो पर बन्ध न हो,
हो तो रक्षा बन्धन हो ॥

राग द्वेष मद मोह गले,
तब ही निज आनंद मिले ।
अभिनंदन पर चढ़ा सुफल,
कर देता नर जन्म सफल ॥

जब तक ना जिनदर्शन हो,
तब तक सम्यग्दर्शन दो ।
चरणों में टेकूँ माथा,
गाऊँ अभिनन्दन गाथा ॥

तीर्थवंदना करके अपना, जीवन सफल बनाता हूँ ।
टोंक टोंक पर कूट – कूट पर, पावन अर्घ चढ़ाता हूँ ॥

अर्घ :– ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्रादि मुनि 72 कोड़ा कोड़ी 70 करोड़ 70 लाख 42 हजार 700 मुनि इस कूट से मोक्ष गए तिनके चरणारविन्द को मेरा मन वचन काय से बारम्बार नमस्कार हो जलादि अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय वलय पूर्णार्घ :– ॐ ह्रीं श्री षोडशदलकमलाधिपते श्री सम्मेदशिखर सिद्ध–भूमि पूर्णार्घ जलादि अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

फल :–इस टोंक की भाव सहित वंदना करने से एक लाख उपवास का फल होता है।

जाप मंत्र – ॐ ह्रीं अर्ह श्री अभिनन्दननाथाय नमः।

श्री धर्मनाथ स्वामी टोंक (सुदत्तवर कूट)

सिद्ध भूमि पर सिद्ध भक्ति से, सिद्धों के गुण गाता हूँ ।
श्री सम्मेद शिखर तीरथ की, पूजा आज रचाता हूँ ।।

तीर्थ शिखरजी आता जो,
लोक शिखर पर जातो वो ।
सिद्धों का वन्दन करता,
सिद्ध परम पद में रहता ।।

आया मैं सम्मेद शिखर,
जागा मेरा पुण्य प्रखर ।
लौटाओ ना नाथ मुझे,
सिद्धालय तक साथ मुझे ।।

श्री सम्मेद शिखर की जय,
धर्मनाथ भगवान की जय ।
धर्मनाथ दो धर्म मुझे,
झुका रहा हूँ माथ तुझे ।।

यह सुदत्तवर कूट कहा,
कर्म निरन्तर छूट रहा ।
ऐसे धर्मनाथ की जय,
जैन धर्म की जय जय जय ।।

तीर्थवंदना करके अपना, जीवन सफल बनाता हूँ ।
टोंक टोंक पर कूट – कूट पर, पावन अर्घ चढ़ाता हूँ ।।

अर्घ :– ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्रादि मुनि 29 कोड़ा कोड़ी 19 करोड़ 9 लाख 9 हजार 795 मुनि इस कूट से सिद्ध भए तिनके चरणारविन्द को मेरा मन वचन काय से बारम्बार नमस्कार हो जलादि अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

फल :–इस टोंक की भाव सहित वंदना करने से एक करोड़ उपवास का फल होता है।

जाप मंत्र – ॐ ह्रीं अर्हं श्री धर्मनाथाय नमः।

श्री सुमतिनाथ स्वामी टोंक (अविचल कूट)

सिद्ध भूमि पर सिद्ध भक्ति से, सिद्धों के गुण गाता हूँ ।
श्री सम्मेद शिखर तीरथ की, पूजा आज रचाता हूँ ।।

सुमतिनाथ की जय जय जय,
सुमति प्रदाता जय जय जय ।
अविचल कहता रह अविचल,
कूट आपका यह अविचल ।।

अविचल पद का दाता है,
अविचल कूट कहाता है ।
शपथ यहाँ ले लेना तुम,
कभी न विचलित होना तुम ।।

शिवपथ में अविचल रहना,
सम्मेदाचल का कहना ।
उपसर्गों को भी सहना,
समता गहना ही गहना ।।

श्री सम्मेद शिखर आऊँ,
बार – बार दर्शन पाऊँ ।
तीर्थ वन्दना फल पाऊँ,
सम्यग्ज्ञान सुमति पाऊँ ।।

तीर्थवंदना करके अपना, जीवन सफल बनाता हूँ ।
टोंक टोंक पर कूट – कूट पर, पावन अर्घ चढ़ाता हूँ ।।

अर्घ :– ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्रादि मुनि 1 कोड़ा कोड़ी 84 करोड़ 72 लाख 81 हजार 781 मुनि इस कूट से सिद्ध भए तिनके चरणारविन्द को मेरा मन वचन काय से बारम्बार नमस्कार हो जलादि अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

फल :–इस टोंक की भाव सहित वंदना करने से 9 करोड़ 32 लाख उपवास का फल होता है।

जाप मंत्र – ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुमतिनाथाय नमः।

श्री शान्तिनाथ स्वामी टोंक
(कुंदप्रभ कूट)

सिद्ध भूमि पर सिद्ध भक्ति से, सिद्धों के गुण गाता हूँ ।
श्री सम्मेद शिखर तीरथ की, पूजा आज रचाता हूँ ।।

जिन सन्तों का ज्ञान नयन,
मृत्यु महोत्सव ही जीवन ।
सदा कमाया संयम धन,
उन सन्तों को नमन– नमन ।।

सर्व परिग्रह के त्यागी,
निस्पृह योगी वैरागी ।
धन्य – धन्य मुनि बड़भागी,
मैं मुनिगुण का अनुरागी ।।

जिनने यहाँ तपस्या की,
उनने दूर समस्या की ।
आत्मशान्ति उनने पायी,
शान्तिनाथ ने दरशायी ।।

इसीलिए दर पे आया,
दुर्लभतम दर्शन पाया ।
मोह तजूँ तो भ्रान्ति हटे,
आत्म शान्ति निज में प्रकटे ।।

तीर्थवंदना करके अपना, जीवन सफल बनाता हूँ ।
टोंक टोंक पर कूट – कूट पर, पावन अर्घ चढ़ाता हूँ ।।

अर्घ :– ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्रादि मुनि 9 कोड़ा कोड़ी 9 लाख 9 हजार 999 मुनि इस कूट से सिद्ध भए तिनके चरणारविन्द को मेरा मन वन काय से बारम्बार नमस्कार हो जलादि अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

फल :–इस टोंक की भाव सहित वंदना करने से एक करोड़ उपवास का फल होता है।

जाप मंत्र – ॐ ह्रीं अर्हं श्री शांतिनाथाय नमः।

श्री महावीर स्वामी टोंक

सिद्ध भूमि पर सिद्ध भक्ति से, सिद्धों के गुण गाता हूँ ।
श्री सम्मेद शिखर तीरथ की, पूजा आज रचाता हूँ ।।

वीर कहूँ अतिवीर कहूँ,
सन्मति जिन महावीर कहूँ ।
वर्द्धमान शुभ नाम रहा,
मेरा सदा प्रणाम अहा ।।

कुण्डलपुर में जन्म लिया,
ऋजुकूला पर ज्ञान हुआ ।
विपुलाचल पर ज्ञान दिया,
पावापुर निर्वाण लिया ।।

मानूँ इसको कुण्डलपुर,
या मानूँ मैं पावापुर,
या मानूँ मैं विपुलाचल,
अपना प्रिय सम्मेदाचल ।।

वर्द्धमान मेरे भगवन्,
सम्मेदाचल से वंदन ।
हे नयनों के पथगामी,
भक्ति भाव से प्रणमामि ।।

तीर्थवंदना करके अपना, जीवन सफल बनाता हूँ ।
टोंक टोंक पर कूट – कूट पर, पावन अर्घ चढ़ाता हूँ ।।

अर्घ :– ॐ ह्रीं श्री महावीर स्वामी पावापुर के पदम् सरोवर स्थान से 26 मुनि सहित मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द को मेरा मन वचन काय से बारम्बार नमस्कार हो जलादि अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।।20।।

जाप मंत्र – ॐ ह्रीं अर्हं श्री महावीराय नमः ......।

श्री सुपार्श्वनाथ स्वामी टोंक
(प्रभास कूट)

सिद्ध भूमि पर सिद्ध भक्ति से, सिद्धों के गुण गाता हूँ ।
श्री सम्मेद शिखर तीरथ की, पूजा आज रचाता हूँ ।।

नाथ आपका कूट प्रभास,
भर देता मन में विश्वास ।
फैला देता ज्ञान प्रकाश,
होने लगता आत्म विकास ।।

पावनतम पर्वत रज है,
औषधि वन प्रभु पद रज है ।
अन्यौषधि से क्या लेना,
केवल पर्वत रज लेना ।।

अरज लगाकर तेरे पास,
रज ले जाता अपने साथ ।
प्रासुक जल से धोकर हाथ,
सदा लगाऊँ अपने माथ ।।

नाथ अरज स्वीकार करो,
पद रज से श्रृंगार करो ।
मेरे नाथ सुपारस जी,
जय-जय नाथ सुपारसजी ।।

तीर्थवंदना करके अपना, जीवन सफल बनाता हूँ ।
टोंक टोंक पर कूट – कूट पर, पावन अर्घ चढ़ाता हूँ ।।

अर्घ :– ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्रादि मुनि 49 कोड़ा कोड़ी 84 करोड़ 72 लाख 7 हजार 742 मुनि इस टोंक से सिद्ध भए तिनके चरणारविन्द को मेरा मन वचन काय से बारम्बार नमस्कार हो जलादि अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ।।21।।

फल :–इस टोंक की भाव सहित वंदना करने से 32 करोड़ उपवास का फल होता है।

जाप मंत्र – ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुपार्श्वनाथाय नमः ....।

श्री विमलनाथ टोंक
(सुवीर कूट)

सिद्ध भूमि पर सिद्ध भक्ति से, सिद्धों के गुण गाता हूँ ।
श्री सम्मेद शिखर तीरथ की, पूजा आज रचाता हूँ ।।

अपने प्यारे भगवन् ! का,
कूट सुवीर विमल जिन का ।
छोटे – छोटे चरण यहाँ,
वे ही तारण– तरण यहाँ ।।

कर्म मैल धोने वाले,
पाप मैल खोने वाले ।
विमल नाथ पद महा विमल,
पाँव पखारूँ मन निर्मल ।।

विमल पदों का गंधोदक,
संयम भावों का शोधक ।
आत्म शुद्धता का बोधक,
अतिचारों का संशोधक ।।

विमल भाव से वन्दन हो,
विमल नाथ पद वन्दन हो ।
विमल धाम दो सिद्धशिला,
पुण्य फला अरिहंत कला ।।

तीर्थवंदना करके अपना, जीवन सफल बनाता हूँ ।
टोंक टोंक पर कूट – कूट पर, पावन अर्घ चढ़ाता हूँ ।।

अर्घ :– ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्रादि मुनि 70 कोड़ा कोड़ी 60 लाख 6 हजार 742 मुनि इस कूट से शिवपुर पधारे तिनके चरणारविन्द को मेरा मन वचन काय से बारम्बार नमस्कार हो जलादि अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ।।22।।

फल :–इस टोंक की भाव सहित वंदना करने से एक करोड़ उपवास का फल होता है।

जाप मंत्र – ॐ ह्रीं अर्हं श्री विमलनाथाय नमः .....।

श्री अजितनाथ स्वामी टोंक
(सिद्धवर कूट)

सिद्ध भूमि पर सिद्ध भक्ति से, सिद्धों के गुण गाता हूँ ।
श्री सम्मेद शिखर तीरथ की, पूजा आज रचाता हूँ ॥

अजितनाथ भगवंत मिले,
विश्व विजय के मंत्र मिले ।
विघ्न विनायक यंत्र मिले,
आप समाधि तंत्र मिले ॥

श्री सम्मेद शिखर से तुम,
मोक्ष गये हो सर्व प्रथम ।
कूट सिद्धवर कहलाया,
ध्यान लगा शिवपद पाया ॥

सिद्ध कूट तक पहुँचाओ,
सिद्ध प्रभो से मिलवाओ ।
दर्शन का फल फलता है,
संयम रखो सफलता है ॥

कार्य करो संशय ना हो,
पुण्य करो निश्चित जय हो ।
प्रतिपल पूर्ण कुशलता हो,
निश्चित मिले सफलता हो ॥

तीर्थवंदना करके अपना, जीवन सफल बनाता हूँ ।
टोंक टोंक पर कूट – कूट पर, पावन अर्घ चढ़ाता हूँ ॥

अर्घ :– ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्रादि मुनि 1 अरब 80 करोड़ 54 लाख मुनि इस कूट से सिद्ध भए तिनके चरणारविन्द को मेरा मन वचन काय से बारम्बार नमस्कार हो जलादि अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

फल :– इस टोंक की भाव सहित वंदना करने से 32 करोड़ उपवास का फल होता है।

जाप मंत्र – ॐ ह्रीं अर्हं श्री अजितनाथाय नमः।

श्री नेमिनाथ स्वामी टोंक
(उर्जयन्त टोंक)

सिद्ध भूमि पर सिद्ध भक्ति से, सिद्धों के गुण गाता हूँ ।
श्री सम्मेद शिखर तीरथ की, पूजा आज रचाता हूँ ॥

मोक्षमार्ग में ही ठहरूँ,
मोक्षमार्ग में ही विचरूँ ।
मोक्षमार्ग को ही ध्याऊँ,
मोक्षमार्ग को ही पाऊँ ॥

मोक्षमार्ग सा पन्थ नहीं,
निर्ग्रन्थों सा सन्त नहीं ।
जिनवर सा भगवंत नहीं,
णमोकार सा मंत्र नहीं ॥

कर्म कर्म है, ज्ञान नहीं,
ज्ञान भोग लूँ कर्म नहीं ।
कर्म भोग से कर्म बढ़े,
ज्ञान भोग से ज्ञान बढ़े ॥

निभूँ - निभाऊँ युक्ति दो,
तपूँ - तपाऊँ शक्ति दो ।
जगू - जगाऊँ भक्ति दो,
अपने जैसी मुक्ति दो ॥

तीर्थवंदना करके अपना, जीवन सफल बनाता हूँ ।
टोंक टोंक पर कूट – कूट पर, पावन अर्घ चढ़ाता हूँ ॥

अर्घ :– ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्रादि शम्बू प्रद्युम्न अनिरूद्ध इत्यादि 72 करोड़ सात सौ मुनि गिरिनार पर्वत से मोक्ष गए तिनके चरणारविन्द को मेरा मन वचन काय से बारम्बार नमस्कार हो जलादि अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

जाप मंत्र – ॐ ह्रीं अर्हं श्री नेमिनाथाय नमः ......।

श्री पार्श्वनाथ टोंक (स्वर्ण भद्र कूट)

सिद्ध भूमि पर सिद्ध भक्ति से, सिद्धों के गुण गाता हूँ ।
श्री सम्मेद शिखर तीरथ की, पूजा आज रचाता हूँ ।।

हे पारस ! समता रस दो,
अनुभव रस क्षमता रस दो ।
जन्में आप बनारस हो,
सचमुच आप समयरस हो ।।

पारस नाथ सरस लागे,
विषय कषाय कुरस लागे ।
मेरे पारस के आगे,
काम कमठ नमकर भागे ।।

जय हो जय हो पारस जिन,
माथ झुका कर नमन–नमन ।
पुण्य घड़ी कब आयेगी,
तीर्थ शिखर जी लायेगी ।।

तुमसे नाथ मिलन होगा,
परम पुण्य दर्शन होगा ।
मैं सम्मेद शिखर आऊँ,
अद्भुत परिवर्तन लाऊँ ।।

तीर्थवंदना करके अपना, जीवन सफल बनाता हूँ ।
टोंक टोंक पर कूट – कूट पर, पावन अर्घ चढ़ाता हूँ ।।

अर्घ :– ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र श्रावण शुक्ल सप्तमी को 36 मुनियों सहित व 82 करोड 84 लाख 45 हजार 742 मुनि इस परम पुनीत स्वर्ण भद्र कूट से (मोक्ष) सिद्ध हुये इन सबके चरणारविन्द को व सिद्ध क्षेत्र को मेरा मन वचन काय से बारम्बार नमस्कार हो जलादि अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

फल :–एक बार इस कूट को शुद्ध भाव से ध्यान व दर्शन करने से पशुगति से छुटकारा हो जाता है। और 16 करोड़ उपवास का फल एक बार भाव सहित वंदना करने से होता है।

जाप मंत्र– ॐ ह्रीं अर्हं श्री पार्श्वनाथाय नमः .....।

श्री पार्श्वनाथ टोंक (स्वर्ण भद्र कूट)

सिद्ध भूमि पर सिद्ध भक्ति से, सिद्धों के गुण गाता हूँ ।
श्री सम्मेद शिखर तीरथ की, पूजा आज रचाता हूँ ।।

सिद्धालय का गर्भालय,
पारस प्रभु का जिन आलय ।
जबसे जिन आलय आया,
मानो सिद्धालय पाया ।।

कहता है जीना – जीना,
संयम मय जीवन जीना ।
ऊँचा गिरि सम्मेद शिखर,
दिखलाता है मोक्ष डगर ।।

स्वर्ण भद्र यह कूट महा,
कर्म निरन्तर छूट रहा ।
पारसनाथ दरश दे दो,
संयम रस, तपरस दे दो ।।

पारस पद वन्दन कर लो,
मन शीतल चन्दन कर लो ।
भज मन भज मन पारस जिन,
पारस पारस पारस जिन ।।

तीर्थवंदना करके अपना, जीवन सफल बनाता हूँ ।
टोंक टोंक पर कूट – कूट पर, पावन अर्घ चढ़ाता हूँ ।।

अर्घ :– ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र श्रावण शुक्ल सप्तमी को 36 मुनियों सहित व 82 करोड 84 लाख 45 हजार 742 मुनि इस परम पुनीत स्वर्ण भद्र कूट से (मोक्ष) सिद्ध हुये इन सबके चरणारविन्द को व सिद्ध क्षेत्र को मेरा मन वचन काय से बारम्बार नमस्कार हो जलादि अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

फल :–एक बार इस कूट को शुद्ध भाव से ध्यान व दर्शन करने से पशुगति से छुटकारा हो जाता है। और 16 करोड़ उपवास का फल एक बार भाव सहित वंदना करने से होता है।

जाप मंत्र– ॐ ह्रीं अर्हं श्री पार्श्वनाथाय नमः .....।

पूर्णार्घ

तीर्थराज सम्मेद शिखर, जय जय जय सम्मेद शिखर ।
परम पूज्य पावन कण –कण, नमूँ – नमूँ सादर क्षण –क्षण ।।

सिद्ध भूमि की जय जय जय, शुद्ध भूमि की जय जय जय ।
तीर्थ भूमि की जय जय जय, पुण्य भूमि की जय जय जय ।।

खड़े रहो पर्वत भू पर, देखो देखो तुम ऊपर ।
सीधे –सीधे लोक शिखर, बुला रहा आजा ऊपर ।।

सिद्धालय में जहाँ – तहाँ, ये मत पूछो कहाँ– कहाँ ?
यत्र तत्र सर्वत्र वहाँ, सिद्ध सिद्ध बस सिद्ध वहाँ ।।

पर्वत पर चढ़कर आये, थके नहीं हम हरषाये ।
अरे चौपड़ा कुण्ड मिला, यह सिद्धों की ध्यान शिला ।।

रोम– रोम हरषाया है, परमानन्द समाया है ।
पार्श्वनाथ के दर्शन कर, चरण युगल में माथाधर ।।

आत्म तत्त्व का उपकारक, सदा स्वात्महित संपादक ।
दिव्य ध्वनि अमृत वर्षा, मधुवन का कण–कण सरसा ।।

जीव मात्र का मन हरषा, जिसने सुनी वही तरसा ।
निज कल्याण कराता यह, पथ निर्वाण चलाता यह ।।

स्वच्छ हरित सम्मेद शिखर, सुर–नर पूजित सिद्ध शिखर ।
मन्द सुगन्धित पवन चले, डाल–डाल पर फूल खिले ।।

औषधियों का नन्दन वन, अपना प्यारा यह मधुवन ।।
देखो– देखो बादल को, लो छू लो बादल दल को ।

काश्मीर या शिमला है, ग्रीष्मकाल में कुहरा है ।
हर मौसम हरियाली है, हर पल यहाँ दिवाली है ।।

वातावरण सुहाना है, पर्यावरण बचाना है ।
चलो– चलो सम्मेदशिखर, तीर्थ वंदना हो मिलकर ।।

कहाँ मिलोगे बतला दो, मिलन पाठ भी सिखला दो ।
निज स्वरूप को ध्याओगे, अपने भीतर पाओगे ।।

जिसको तू पारस कहता, मैं तेरा तुझमें रहता ।
कर लेगा तू निजदर्शन, मिल जाये पारस दर्शन ।।

तू ही मैं हूँ, मैं ही तू, मैं ही मैं हूँ तू ही तू ।
मुझमें मैं हूँ तुझमें तू, तुझमें मैं हूँ मुझमें तू ।।

यह नय शैली सिखलायी, ज्ञानकला ही प्रकटायी ।
अर्घ समर्पण करता हूँ, माथा चरणों धरता हूँ ।।

तृतीय (अंतिम) वलय पूर्णार्घ :– ॐ ह्रीं श्री पंचविंशतिदलकमलाधिपते श्री सम्मेद शिखर सिद्ध–भूमि पूर्णार्घ जलादि अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

रेखता छंद

अहो सिद्धों की भूमि ये, सभी सिद्धों का सिद्धि धाम ।
सर्व सिद्धि की दाता ये, कार्य सिद्धि पहला नाम ।।

यहाँ से अगणित सिद्ध हुए, बता सकते हैं जिन भगवान ।
यहाँ से भाव सजाकर के, करें हम सिद्धों का गुणगान ।।

शिखर जी वे ही आते हैं, सिद्ध श्रेणी में जिनका नाम ।
वंदना वे ही कर पाते, भले होते जिनके परिणाम ।।

नरक पशुगति में ना जाते, बताते आगम शास्त्र प्रमाण ।
दरश हम पाले इसका आज, धन्य हो जायेंगे ये प्राण ।।

सुधर जाते हैं उनके भाव, भावना पूरी हो जाती ।
वंदना फल देती उनको, कामना पूरी हो जाती ।।

अरे इस पर्वत का अतिशय, बदल जाते हैं पल में भाव ।
हृदय परिवर्तन हो आता, हृदय में जगते निर्मल भाव ।।

पाप तज देते पापीजन, पुण्य से भर लेते भण्डार ।
भोग तज देते भोगीजन, त्याग संयम लेते स्वीकार ।।

तपो ऊर्जा के ये भण्डार, तपस्वी तप तपने आते ।
शुद्ध भावों के अक्षय कोष, शुद्धता कण –कण में पाते ।।

यहाँ का कण– कण पावन है, अरे पावनता का क्या राज ?
शुक्ल ध्यानी उन संतों की, साधना का शाश्वत साम्राज्य ।।

तुम्हारे सेवक की सेवा, देवता करने आते हैं ।
कभी बादल बन छा जाते, कभी वह जल वरषाते हैं ।।

कभी मन्दार सुगन्धित सम, मन्द मारुत ले आते हैं ।
थके भक्तों के कदमों की, थकावट दूर भगाते हैं ।।

यही कारण पर्वत ऊपर, सभी निर्भयता पाते हैं ।
अकेले हम यदि रह जायें, देवता साथ निभाते हैं ।।

सुखोदय पारस सुखदाता, गुणोदय पारस गुणदाता ।
शुभोदय पारस शुभदाता, शिवोदय पारस शिवदाता ।।

चले आओ भक्तों इकबार, शिखर जी सिद्धों का दरबार ।
करो सिद्धों का शुभ दर्शन, खुलेगा तुमको सिद्धि द्वार ।।

मुझे यह अनुभव होता है, हमारा मन ये कहता है ।
शिखर जी में आने वाला, सिद्ध आलय में रहता है ।।

आप भावों के स्वामी हो, स्वयं के भाव साधना है ।
आत्मा तेरी ही आधार, तुम्हारे साथ प्रार्थना है ।।

पूर्णार्घ :— ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्ध–भूमि जयमाला पूर्णार्घ जलादि अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ।

आशिका (अंतिम प्रार्थना)

नाथ ! नहीं कुछ माँगता, नहीं हृदय में चाह ।
संयम पथ मैंने चुना, चलूँ सदा शिवराह ।।

प्रभुवर ! तुम निर्दोष हो, मैं हूँ नाथ सदोष ।
श्री चरणों की वंदना, करे मुझे निर्दोष ।।

चन्द्रप्रभ दे दीजिए, यथाख्यात चारित्र ।
मोक्षमार्ग में आप हो, श्रेष्ठ हमारे मित्र ।।

परम पूज्य शुभतीर्थ में, माया मद मिट जाय ।
राग द्वेष विघटें सभी, दर्शन का फल पाय ।।

विषय वासना वस्त्र तज, हुआ पूर्ण निर्ग्रन्थ ।
वीतरागता नित बढ़े, रहूँ दिगम्बर सन्त ।।

नाथ ! बुलाया आपने, आया तेरे द्वार ।
श्वास –श्वास रटता रहूँ, जिनवर जय जयकार ।।

जाता हूँ प्रभु द्वार से, पद चिन्हों की राह ।
पथगामी तुमही रहो, और नहीं कुछ चाह ।।

पुष्पांजलिं क्षिपामि ।

वात्सल्य रत्नाकर, निमित्तज्ञानी

आचार्य विमल सागर

पूजा

दोहा – आह्वानन गुरुदेव का, भक्ति भाव के साथ
कोटि – कोटि वन्दन करूँ, झुका – झुका कर माथ ।।
श्री गुरुवर जी आइए, पूजा करता आज ।
निमित्तज्ञानी आप हो, विमल सागर महाराज ।।

ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी विमलसागर मुनिवरेभ्यो अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम् ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम् !

जल से शीतल गुरु की वाणी, हम जल क्या लायें ।
गंगा जल सम गुरु वचनों में, निज मन नहलायें ।।
भक्ति भाव से ओत –प्रोत मन, यह श्रद्धा जल लो ।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो ।।

ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी विमलसागर मुनिवरेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चारित चंदन तरुवर तुम हो, चंदन क्या लायें ।
चारित दाता से चारित पा, चेतन महकायें ।।
पंचम चारित पाने गुरुवर, चंदन अर्पित हो ।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो ।।

ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी विमलसागर मुनिवरेभ्यो संसार ताप विनाशनाय चंदनम् निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय तप के हो भण्डारी, विमल विहारी हो ।
दुखियों के दुख हरने वाले, करुणाधारी हो ।।
अक्षय पद दाता गुरु चरणों, अक्षत अर्पित हो ।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो ।।

ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी विमलसागर मुनिवरेभ्यो अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सुख को पाकर जो ना फूले, जो ना दुखी हुये ।
उनके चरणों फूल चढ़ा हम, कितना सुखी हुए ।।
पुष्प सुकोमल गुरुवर पद में, पुष्प समर्पित हो ।
मेरा अंतिम मरण समाधि तेरे दर पर हो ।।

ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी विमलसागर मुनिवरेभ्यो कामबाण विनाशनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।

हम रोगी हैं वैद्य आप हो, चर्या औषधि है ।
गुरु चरणों की पावन पदरज, ही सर्वोषधि है ।।
क्षुधा वेदना रोग मिटाने, व्यंजन अर्पित हो ।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो ।।

ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी विमलसागर मुनिवरेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु ने सम्यक् दीप जलाया, ज्ञान ज्योति जारी ।
मोक्षमार्ग को किया प्रकाशित, मोह तिमिर हारी ।।
केवलज्ञान कला प्रकटाने, दीप समर्पित हो ।
मेरा अंतिम मरण समाधि तेरे दर पर हो ।।

ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी विमलसागर मुनिवरेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जितनी धूप सही गुरुवर ने, तरुवर के जैसी ।
उतनी छाया मिली जगत को, पंथी तरुवर सी ।।
आठों कर्म जलाने गुरुवर, धूप समर्पित हो ।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो ।।

ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी विमलसागर मुनिवरेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

कल्पवृक्ष हो कामधेनु हो, या चिन्तामणि हो ।
अचिन्त्य फल को देने वाले, गुरु चेतनमणि हो ।।
महामोक्ष फल पाने गुरुवर, श्री फल अर्पित हो ।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो ।।

ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी विमलसागर मुनिवरेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

वात्सल्य रत्नाकर गुरुवर ! हे निमित्त ज्ञानी ।
पूज्य विमल सागर जी ऋषिवर ! हे संयम दानी ।।
अर्घ समर्पण करने आया, गुरुणां गुरुवर को ।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो ।।

ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी विमलसागर मुनिवरेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

गुरु दर्श मिले मन सुमन खिले, खुशहाली आयी ।
खेतों में हरियाली घर– घर, दीवाली आयी ।।
विमल मंत्र का जाप सुमरते, प्रतिपल संवर हो ।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो ।।1।।

कौन कहाँ पर कब तक कैसे, कितना दुखी हुआ ।
विमल कृपा का पात्र बना तब, तत्क्षण सुखी हुआ ।।
तुम दुखियों के दुःख निवारक, सिद्ध मंत्र सम हो ।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो ।।2।।

कौन कहाँ से प्रश्न पूछने, कब –कब आयेगा ।
कैसा –कैसा समाधान पा, मन हरषायेगा ।।
शंकाओं के समाधान तुम, अनुपम उत्तर हो ।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो ।।3।।

बना चौपड़ा कुण्ड जिनालय गुरु आशीष तले ।
तीस चौबीसी भव्य जिनालय, देखो भले– भले ।।
विमल समाधि मन्दिर आऊँ, तीर्थ शिखर जी हो ।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो ।।4।।

तुमको गुरु बनाया किनने, कितने शिष्य हुए ।
परम्परा में संयम धारी, और प्रशिष्य हुए ।।
उनके नामों का उल्लेखन, संयत स्वर में हो ।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो ।।5।।

मिला भरत भारत माता को, विमल श्रमण द्वारा ।
विराग सागर गणाचार्य क्या, कुल का उजियारा ।
ऊर्जयन्त सागर जी बोले, चैत्य दरश करलो ।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो ।।6।।

पुष्पदन्त जो पुष्पगिरी के, तीर्थ प्रणेता हैं ।
पूज्य विमल सागर गुरुवर के, दीक्षित बेटा हैं ।।
स्याद्वाद माता के मुख से, आगम मुखरित हो ।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो ।।7।।

जन्म जयंती आयी गुरु की, श्री गुरुवर बोले ।
शास्त्र प्रकाशित करो पचहत्तर शुभ रहस्य खोले ।।
पूर्वाचार्यों का जैनागम, हर घर मन्दिर हो ।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो ।।8।।

धन्य-धन्य हे पिता विहारी, मात कटोरी जी ।
नेमीनाथ सा नेमी सुत वह, खेला गोदी जी ।।
धन्य कोसमा जन्म धरा की, रज माथे पर हो ।
मेरा अन्तिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो ।।9।।

विमल ज्ञान हो, विमल ध्यान हो, विमल तपस्या हो ।
विमल देव का नाम सुमरते, दूर समस्या हो ।।
वात्सल्य बरसाने वाले, मेरे गुरुवर हो ।
मेरा अन्तिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो ।।10।।

ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी विमलसागर मुनिवरेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा। **(पुष्पांजलिं क्षिपामि)**

श्री सम्मेद शिखर स्तुति

इस पर्वत का कण– कण गाये, सिद्धों की गाथा ।
तीर्थराज सम्मेद शिखर को, झुका रहा माथा ।।

भाव सहित वंदे जो कोई, नरक नहीं जाता ।
ऐसा अद्‌भुत परिवर्तन वह, जीवन में लाता ।।
तीर्थ भक्त वह तीर्थ भूमि पर, संयम उपजाता ।
तीर्थराज सम्मेद शिखर को, झुका रहा माथा ।।

पर्वत ऊपर जाने वाले, ऊपर को जाते ।
सिद्ध अनंतानंत यहाँ पर, हमको बतलाते ।।
जिसकी जितनी बड़ी विशुद्धि, उतना फल पाता ।
तीर्थराज सम्मेद शिखर को, झुका रहा माथा ।।

बुला रहा सम्मेद शिखर जी, आओ– आओ रे ।
अपने भीतर सिद्ध विराजा, वह प्रकटाओ रे ।।
सिद्ध गिरि पर्वत ने जोड़ा, सिद्धों से नाता ।
तीर्थराज सम्मेद शिखर को, झुका रहा माथा ।।

यह अनादि से सिद्ध भूमि है, सिद्ध अनंतों की ।
तीर्थंकर ऋषियों – मुनियों की, साधु सन्तों की ।।
निकट भव्य सौभाग्यवंत ही, दर्शन कर पाता ।
तीर्थराज सम्मेद शिखर को, झुका रहा माथा ।।

जन्म– जन्म के पुण्य हमारे, आज उदय आये ।
श्री सम्मेद शिखर तीरथ के, शुभ दर्शन पाये ।।
सिद्ध शिला के सब सिद्धों से, जोड़ लिया नाता ।
तीर्थराज सम्मेद शिखर को, झुका रहा माथा ।।

समाधि भक्ति
प्रथम अधिकार

तेरी छत्रच्छाया भगवन् ! मेरे शिर पर हो ।
मेरा अन्तिम मरणसमाधि, तेरे दर पर हो ।।

जिनवाणी रसपान करूँ मैं, जिनवर को ध्याऊँ ।
आर्यजनों की संगति पाऊँ, व्रत–संयम चाहूँ ।।
गुणीजनों के सद्‌गुण गाऊँ, जिनवर यह वर दो ।
मेरा अन्तिम मरणसमाधि, तेरे दर पर हो ।।1।।

परनिन्दा न मुँह से निकले, मधुर वचन बोलूँ ।
हृदय तराजू पर हितकारी, सम्भाषण तौलूँ ।।
आत्म–तत्त्व की रहे भावना, भाव विमल भर दो ।
मेरा अन्तिम मरणसमाधि, तेरे दर पर हो ।।2।।

जिनशासन में प्रीति बढ़ाऊँ, मिथ्यापथ छोड़ूँ ।
निष्कलंक चैतन्य भावना, जिनमत से जोड़ूँ ।।
जन्म– जन्म में जैनधर्म, यह मिले कृपा कर दो ।
मेरा अन्तिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो ।।3।।

मरण समय गुरु–पादमूल हो, सन्त समूह रहे ।
जिनालयों में जिनवाणी की, गंगा नित्य बहे ।।
भव-भव में सन्यास मरण हो, नाथ हाथ धर दो ।
मेरा अन्तिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो ।।4।।

बाल्यकाल से अब तक मैंने, जो सेवा की हो ।
देना चाहो प्रभो ! आप तो, बस इतना फल दो ।।
श्वास –श्वास, अन्तिम श्वासों में, णमोकार भर दो ।
मेरा अन्तिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो ।।5।।

विषय कषायों को मैं त्यागूँ, तजूँ परिग्रह को ।
मोक्षमार्ग पर बढ़ता जाऊँ, नाथ अनुग्रह हो ।।
तन पिंजर से मुझे निकालो, सिद्धालय घर दो ।
मेरा अन्तिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो ।।6।।

भद्रबाहु सम गुरु हमारे, हमें भद्रता दो ।
रत्नत्रय संयम की शुचिता, हृदय सरलता दो ।।
चन्द्रगुप्त सी गुरु सेवा का, पाठ हृदय भर दो ।
मेरा अन्तिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो ।।7।।

अशुभ न सोचूँ, अशुभ न चाहूँ, अशुभ नहीं देखूँ ।
अशुभ सुनूँ ना, अशुभ कहूँ ना, अशुभ नहीं लेखूँ ।।
शुभ चर्या हो, शुभ क्रिया हो, शुद्ध भाव भर दो ।
मेरा अन्तिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो ।।8।।

तेरे चरण कमल द्वय, जिनवर ! रहे हृदय मेरे ।
मेरा हृदय रहे सदा ही, चरणों में तेरे ।।
पण्डित – पण्डित मरण हो मेरा, ऐसा अवसर दो ।
मेरा अन्तिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो ।।9।।

मैंने जो जो पाप किए हों, वह सब माफ करो ।
खड़ा अदालत में हूँ स्वामी, अब इंसाफ करो ।।
मेरे अपराधों को गुरुवर, आज क्षमा कर दो ।
मेरा अन्तिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो ।।10।।

दुःख नाश हों, कर्म नाश हों, बोधि– लाभ वर दो ।
जिन गुण से प्रभु आप भरे हो, वह मुझमें भर दो ।।
यही प्रार्थना, यही भावना, पूर्ण आप कर दो ।
मेरा अन्तिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो ।।11।।

समाधि भक्ति
द्वितीय अधिकार

अहो अकिंचन मैं हूँ मेरा, इस जग में क्या है ?
मेरे गुण तो मेरे भीतर, बाहर में क्या है ।
यह रहस्य परमात्मकला का, पूर्ण उजागर हो ।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो ।।1।।

मैं पवित्र हूँ मैं प्रसन्न हूँ, पूर्ण स्वस्थ हूँ मैं ।
ज्ञानवान हूँ ध्यानवान हूँ, आत्मस्थ हूँ मैं ।।
आत्मक्रिया चिन्तन मन्थन में, निज मन तत्पर हो ।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो ।।2।।

शील सहित नर भी मरता है, शील रहित मरता ।
धैर्य सहित नर भी मरता है, धैर्य रहित मरता ॥
शील सहित हो धैर्य सहित हो, वह समाधि वर दो ।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो ॥3॥

ज्ञान भावना दर्श भावना, चरित भावना हो ।
ये तीनों तो आत्मरूप हैं, आत्मभावना हो ॥
रत्नत्रय की बहे त्रिवेणी, प्रतिपल संवर हो ।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो ॥4॥

अरिहंतों को नमन हमारा, सिद्ध नमन मेरा ।
सूरि पाठक साधुजनों को, नित्य नमन मेरा ॥
पंच परम परमेष्ठी हमारे, पंच पाप हरलो ।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो ॥5॥

अरिहंतों का पहला मंगल, सिद्धों का दूजा ।
साधुजनों का तीजा मंगल, धर्म कहा चौथा ॥
चारों मंगल मेरा जीवन, मंगलमय कर दो ।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो ॥6॥

अरिहंतों का पहला उत्तम, सिद्धों का दूजा ।
साधुजनों का तीजा उत्तम, धर्म कहा चौथा ॥
चारों उत्तम मेरा जीवन, सर्वोत्तम कर दो ।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो ॥7॥

अरिहंतों की पहली शरणा, सिद्धों की दूजी ।
साधुजनों की तीजी शरणा, धर्म शरण चौथी ॥
चारों शरणा भय दुःख हरणा, मुझे शरण रखलो ।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो ॥8॥

गुरु से मुझको मिला है कितना , क्यों इतना सोचूँ ।
मैंने कितना किया समर्पण, बस इतना सोचूँ ॥
सेवा और समर्पण प्रतिपल, बढंते क्रम पर हो ।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥9॥

संयम भाव जगाना गुरुवर ! काम तुम्हारा है ।
संयम पालन करना गुरुवर ! काम हमारा है ॥
अब तो प्रतिपल प्रतिपग मेरा, संयम पथ पर हो ।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो ॥10॥

संयम पथ निर्बाध बनाओ, मेरे गुरुवर जी ।
मोक्षमहल तक साथ निभाओ, मेरे प्रभुवर जी ॥
उपसर्गों में बाधाओं में, कभी नहीं डर हो ।
मेरा अन्तिम मरण समाधि तेरे दर पर हो ॥11॥

समाधि भक्ति
तृतीय अधिकार

बिन भोगे ही भव भोगों को, त्यागा धन्य वही ।
भोग बुरे लख जिनने त्यागे, वे सब धन्य मही ।।
मोह रहित जप ज्ञान सहित तप, त्याग निरन्तर हो ।
मेरा अन्तिम मरण समाधि तेरे दर पर हो ।।1।।

भव–भव में मुनिराज बनूँ मैं, यही भावना है ।
भव–भव में जिनधर्म गहूँ मैं, यही भावना है ।।
बाल ब्रह्मचारी मुनि होऊँ, रत्नत्रय वर दो ।।
मेरा अन्तिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो ।।2।।

मैं तप धारूँ मैं श्रुत धारूँ, सम्यक व्रत धारूँ ।
धर्मध्यान में रत होकर के, शुक्ल ध्यान धारूँ ।।
शुक्ल ध्यान में कर्म जलाऊँ, जाना शिवपुर हो ।
मेरा अन्तिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो ।।3।।

मैं कैसा हूँ केवलज्ञानी !, जैसा तुम जानो ।
मैं वैसा हूँ अंतर्यामी !, जैसा तुम मानो ।।
वीतराग सर्वज्ञ हितैषी, तुम अविनश्वर हो ।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो ।।4।।

उत्तम त्यागी वे हैं जिनने, अर्जन नहीं किया ।
मध्यम त्यागी वे हैं जिनने, अर्जित त्याग किया ।।
जघन्य त्यागी सौंप संपदा, सन्त दिगम्बर हो ।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो ।।5।।

भव अनन्त के भ्रमण चक्र को, आज रोकता हूँ ।
देव शास्त्र गुरुवर के चरणों, माथ टेकता हूँ ।।
अब निर्दोष तपस्या का फल, सिद्ध परम पद हो ।
मेरा अन्तिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो ।।6।।

ना जाने कब तेरे दर से, चलना हो जाये ।
किस विधि फिर से दर्शन पाना, दुर्लभ हो जाये ।।
उत्तमार्थ प्रतिकर्म करूँ मैं, सर्व दोष हर लो ।
मेरा अन्तिम मरण समाधि तेरे दर पर हो ।।7।।

चन्द्रप्रभ भगवान हमारे, हमको चारित दो ।
चरण कमल की करूँ वन्दना, मन पवित्र कर दो ।।
श्री सम्मेद शिखर का दर्शन, हमको फिर–फिर हो ।
मेरा अंतिम मरण समाधि तेरे दर पर हो ।।8।।

नंदीश्वर के दर्शन पाऊँ, पंचमेरु जाऊँ ।
श्री विदेह में तीर्थंकर के, समवशरण जाऊँ ।।
उड़ जाऊँ निर्वाण लक्ष्य तक, प्रभुवर वह पर दो ।
मेरा अन्तिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो ।।9।।

एक मात्र जिनभक्ति आपकी, है समर्थशाली ।
दुर्गति रोधक सन्मति बोधक, महापुण्यशाली ।।
शाश्वत मोक्ष महल की चाबी, संस्तुति जिनवर हो ।
मेरा अन्तिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो ।।10।।

दर्शन-भावना

पुनः दर्शन-पुनः दर्शन-पुनः दर्शन मिले स्वामी।
यही है भावना स्वामी-यही है प्रार्थना स्वामी॥

तुम्हारे दर्श बिन स्वामी, कहाँ हम चैन पायेंगे।
प्रभुवर! याद आयेगी - नयन आँसू बहायेंगे॥
निकाली नीर से मछली, तड़पती चेतना स्वामी।
पुनः दर्शन-पुनः दर्शन-पुनः दर्शन मिले स्वामी॥1॥

बिना स्वाति की बूँदों के, पपीहा प्राण तज देगा।
कृपा के मेघ बरसा दो, जिनेश्वर नाम रट लेगा॥
निहारे चातका तुमको, यही रटना रटे स्वामी।
पुनः दर्शन पुनः दर्शन-पुनः दर्शन मिले स्वामी॥2॥

विरह की वेदना स्वामी-तुम्हें कैसे सुनायें हम।
चाँद बिन ज्यों चकोरे सा-हमारा आज ये तन-मन॥
शिशु माता से बिछड़ा ज्यों,रुदन करता रहे स्वामी।
पुनः दर्शन पुनः दर्शन-पुनः दर्शन मिले स्वामी॥3॥

नहीं सुर सम्पदा चाहूँ -नहीं मैं राजपद चाहूँ।
यही है कामना मेरी, प्रभु तुमसा ही बन जाऊँ॥
मिले निर्वाण न जौलों, रहो नयनों के पथगामी।
पुनः दर्शन पुनः दर्शन पुनः दर्शन मिले स्वामी॥4॥

आचार्य विभव सागर जी महाराज के संघस्थ साधुगण

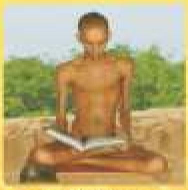
मुनि श्री 108
आचरण सागर जी महाराज

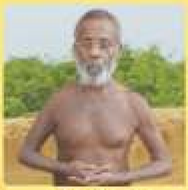
मुनि श्री 108
अमृत सागर जी महाराज

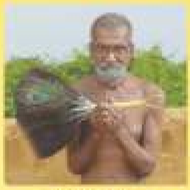
मुनि श्री 108
अध्ययन सागर जी महाराज

मुनि श्री 108
आवश्यक सागर जी महाराज

मुनि श्री 108
अध्यापन सागर जी महाराज

मुनि श्री 108
अर्हंत सागर जी महाराज

मुनि श्री 108
आचार सागर जी महाराज

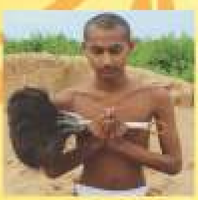
ऐलक श्री 105
अनेकान्त सागर जी महाराज

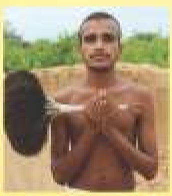
ऐलक श्री 105
आगम सागर जी महाराज

आर्यिका श्री 105
अर्हम् श्री माताजी

आर्यिका श्री 105
ओम् श्री माताजी

क्षुल्लक श्री 105
अनशन सागर जी महाराज

क्षुल्लक श्री 105
अनुशासन सागर जी महाराज

क्षुल्लिका श्री 105
अहिंसा श्री माताजी

क्षुल्लिका श्री 105
ह्रीम् श्री माताजी

क्षुल्लिका श्री 105
आराधना श्री माताजी

सारस्वत श्रमण नय चक्रवर्ती श्रमणाचार्य
108 श्री विभवसागर जी महाराज

पूर्व नाम	पण्डित अशोक कुमार जी जैन शास्त्री
जन्मस्थान	किसनपुरा (सागर) म.प्र.
जन्मतिथि	कार्तिक कृष्ण अमावस्या 2033 तदनुकूल 23 अक्टूबर 1976
पिता	श्रावकरत्न श्री लखमीचन्द्र जैन
माता	श्राविकारत्न श्रीमती गुलाबबाई जैन
शिक्षा	संस्कृत शास्त्री प्रथम वर्ष (इण्टर)
धार्मिक शिक्षा	धर्मशास्त्री द्वितीय वर्ष
शिक्षण संस्थान	श्री गणेशवर्णी दिगम्बर जैन महाविद्यालय मोराजी सागर म.प्र.
वैराग्य	9 अक्टूबर 1994 को ब्र. व्रत लिया
क्षु. दीक्षा	28 जनवरी 1995 मंगलगिरि सागर म.प्र.
ऐलक दीक्षा	23 फरवरी 1998 देवेन्द्रनगर (पन्ना) म.प्र.
मुनि दीक्षा	14 दिसंबर 1998 अतिशय क्षेत्र बरासौ भिण्ड म.प्र.
दीक्षा गुरु	गणाचार्य 108 श्री विरागसागर जी महाराज
आचार्य पद	31 मार्च 2007 औरंगाबाद (महाराष्ट्र)
विशेष	जैन आगम रुपी मानसरोवर के राजहंस की तरह झलक देने वाले प्रज्ञाश्रमण की प्रवचन शैली जन-जन द्वारा हृदयग्राह्य है।
कृतियाँ	अभी तक आचार्य श्री द्वारा 62 कृतियों की सृजना की गई है।
अलंकरण	" सारस्वत-श्रमण ", " सारस्वत-कवि " एवं " शास्त्र-कवि "

मुद्रक : वीर प्रिंटिंग प्रेस, अशोक नगर. मो. 8989456097